www.tv9hindi.com /religion/know-the-meaning-of-diwali-before-celebrating-it-2221891.html

दिवाली मनाने से पहले उसका मर्म जानें

Acharya Prashant : 5-6 minutes : 11/12/2023

भारत त्योहारों का देश है, इतने त्योहार कहीं भी नहीं होते. पंचांग देखें, तो महीने के करीब हर दिन कोई न कोई त्योहार होता ही है. मुश्किल से कोई दिन मिलेगा जिसमें त्योहार न हो. इतना पुराना देश है भारत और साल में 365 दिन होते हैं. हमारे देश का इतना पुराना इतिहास है कि हर दिन ही हमें कोई न कोई कारण मिल जाता है उत्सव मनाने का. हमारा पूरा साल भर का कैलेंडर त्योहारों से भरा पड़ा है.

त्योहार का ये मतलब होता है कि जो कुछ भी आप जीवन में सार्थक कर रहे होते हैं, उसमें बीच में बाधा आ जाती है, लेकिन त्योहार का ये अर्थ नहीं होना चाहिए. त्योहार का बहुत ऊंचा अर्थ होना चाहिए, त्योहार बड़े गहरे, आनंद और अर्थ के दिन होने चाहिए पर हमारे देश में ऐसा नहीं है और साल भर हम त्योहार ही त्योहार मनाते हैं. भारत में इतने त्योहारों का मतलब भी यही होता है कि अब हम काम नहीं करेंगे चाहे वो पढ़ाई का काम हो और चाहे वो नौकरी हो, उद्योग का, व्यापार का, कोई काम हम काम नहीं करेंगे. अब आप देख लीजिए कि फिर त्योहारों का व्यक्ति और राष्ट्र की प्रगति पर क्या असर पड़ता है?

क्यों मनाना चाहिए त्योहार?

त्योहार होना चाहिए सार्थक कर्म का उत्सव. अगर त्योहार आया है तो हम खुशी मनाएंगे खुशी मनाने की कोई वजह होनी चाहिए. खुशी मनाने की कोई पात्रता होनी चाहिए, त्योहार को तो मैं ऐसा कहा करता हूं कि जैसे साल के अंत में, जब साल भर की पढ़ाई का परिणाम घोषित हो रहा हो वो दिन, उस दिन खुशी मनाने का हकदार सिर्फ वही है, जिसने साल भर मेहनत की हो, ये बाकी लोग किस बात पर नाच कूद रहे हैं?

श्रीराम का त्योहार है इस पर खुशी मनाने का अधिकार तो उन्हीं का है, जिन्होंने साल भर थोड़ा तो श्रीराम जैसा जीवन जिया हो. आपका जीवन पूरे साल रावण जैसा रहा है और आप दिवाली पर खुश हो रहे हो ये बात तो बड़ी असंगत और बेमेल हो गई. आप खुद रावण जैसे हो और आप दशहरे पर नाच गाना कर रहे हैं और बड़े खुश हो रहे हो कि मैंने तो रावण जला दिया, खुद को ही जला लेते. ये बात तो किसी तुक की नहीं है, समझ में आ रही है बात.

त्योहार का मतलब?

त्योहार का मतलब होता है कि पहले मैं सही जीवन जीऊंगा और उसके बाद एक दिन आएगा ,जब मैं अपने आप को बधाई दूंगा कि हां साल भर सही जीवन जिया और आज मैं खुलकर घोषित कर रहा हूं साल भर सही जीवन जिया. हम सही जीवन जी कहां रहे हैं? चाहे राम हों, चाहे कृष्ण हों हम उनकी सीख पर, उनके आदर्शों पर, उनके जीवन पर कहां चल रहे हैं? बस उनसे संबंधित जो त्योहार आते हैं, उनमें हुड़दंग मचाने को हम सबसे आगे रहते हैं. इसी तरह भारत में जो हाथ के काम होते हैं, उनमें मुस्लिम समुदाय ज्यादा आगे रहता है. लकड़ी का काम हो, मशीनरी का और प्लम्बिंग का काम. एक महीना कोई भी काम करना मुश्किल हो जाता है. जब रमज़ान चल रहा हो, वहां आपको कारीगर नहीं मिलेगा. एक महीना आपका जो भी काम है ठप पड़ा रहेगा. आपको थोड़ा फर्नीचर का काम कराना है, आप नहीं करा सकते, आपको पुताई का काम कराना है, नहीं करा सकते क्यों? कारीगर उपलब्ध नहीं है, वो सब अपने गांव गए हैं ईद मनाने के लिए.

होना तो यह चाहिए कि त्योहार आया है तो मैं तेजी से काम करूंगा, क्योंकि काम ही तो जिंदगी है. मेरा कर्म ही धर्म है, हमारे यहां यह होता है कि जब त्योहार आता है तो हम अपना कर्म बिल्कुल रोक देते है. और अगर आपका कर्म ऐसा है कि उसको रोकना पड़ता है, तो फिर वो कर्म करने लायक ही नहीं रहा होगा. जिस कर्म को त्योहार पर रोकना पड़े, इसका मतलब वो कर्म त्योहार से मेल नहीं खा रहा न?

त्योहार का मतलब होता है कोई ऐसी चीज़ जो पूजने लायक है, त्योहार का संबंध दैवीयता से होता है न? त्योहार का संबंध किसी ऐसे से जो पवित्र है, पवित्र दिन पर अगर कुछ रोकना पड़ रहा है तो वो चीज़ कैसी होगी? अपवित्र होगी और अगर पवित्र दिन पर काम रोकना पड़ रहा है, तो निश्चित ही आपका काम क्या था? बड़ा अपवित्र था तो अपवित्र काम आप साल भर करते रहे उसके बाद फिर आप पवित्र उत्सव मना ही क्यों रहे हो? अगर वास्तव में आपका जीवन पवित्र हो, आपका कर्म पवित्र हो तो त्योहार तो

आप मनाओगे और ज्यादा काम करके न? लेकिन हमारा जो जीवन होता है उसमें कहीं दैवीयता होती नहीं, उसमें कहीं कृष्णतत्व या रामतत्व तो होता नहीं. तो फिर हमें वो सारा काम रोकना पड़ता है त्योहारों पर और थोड़ा बहुत नहीं रोकते हम. आप बंगाल जाइए वहां दुर्गा पूजा के समय पूरा प्रांत रुक जाता है. 9 दिन ही नहीं वो भी महीने भर के लिए न तो पढ़ाई होगी और न कोई काम. हां खरीदारी होती है, लोगों ने जो जमापूंजी इकट्ठा कर रखी होती है, उसको भोग की चीजों में वो खर्च कर डालते हैं. उत्पादन नहीं होता है, विक्रय होता है. उसमे कोई वैल्यू एडिशन नहीं है, आप अगर ये कहें की त्योहारों पर देखो इकनॉमिक एक्टिविटी तो बहुत ज़्यादा होती है न? वो इकनॉमिक एक्टिविटी डिसेप्टिव है, झूठ है क्योंकि असली बात तो उत्पाद है. उत्पाद थोड़े हो रहा है, उत्पाद वाले लोग तो जाकर के धूम मचा रहे हैं इधर उधर घूम रहे हैं.

मिल जाता है काम से भागने का बहाना

त्योहारों पर आप देखो तो ऐसी ऐसी चीजों पर सेल लगा होता है, जिनका धर्म से क्या लेना देना. वाशिंग मशीन में 15% डिस्काउंट. दिवाली से कपड़े धोने वाली चीज़ का क्या लेना देना ? पर वो सब कार्यक्रम चल रहा है. वास्तव में हम अपने त्योहार वैसे ही मना रहे हैं, जैसे हमारी धार्मिकता है उथली. तो हमारे त्योहार भी उथले होते हैं और हमारा काम ऐसा होता है कि हम उस काम से भागने का कोई न कोई बहाना ढूंढ़ते हैं. तो हमें त्योहारों में बहाना मिल जाता है काम से भागने का.

एक सच्चा आदमी जो सचमुच धार्मिक जीवन जी रहा होगा वो अपने जीवन में कर्म ही ऐसा चुनेगा कि उस कर्म से कभी भागना न पड़े. उसको जब उत्सव मनाना होगा तो उस दिन कहेगा आज में दोगुना काम करूंगा. वो कहेगा आज मेरा धार्मिक त्योहार है, आज हम दोगुना काम करेंगे. ये होगा उसका उत्सव मनाने का तरीका. लेकिन जो आदमी नकली ज़िंदगी जी रहा होगा. फरेब की जिंदगी जी रहा होगा वो मौका तलाश लेगा कि किस तरीके से अपना काम मैं बंद कर दूं.